गीत एवं काव्य का परिचय

सदियों से, भारत के सन्त-कवियों ने, भगवान की महिमा का गुणगान करते गीतों एवं कविताओं को अपने अक्षय प्रेम, प्रज्ञान व पूर्ण जाग्रत चेतना से ओतप्रोत किया है। किसी सन्त की अनुभूतियों के अनूठे दृष्टिकोण से रचित ये उल्लासपूर्ण पद, समय व स्थान की सीमाओं से परे, जीवन के हर क्षेत्र के लोगों के लिए सर्वोच्च आध्यात्मिक सत्य को सुलभ बनाते हैं। आज उनकी रचना के सैकड़ों वर्षों बाद भी, सन्तों का यह काव्य, हमारे लिए एक प्रवेश-द्वार खोल देता है जिसके द्वारा हम उन सन्त के परम आनन्द व भगवान के प्रति उनकी असाधारण दृष्टि व भाव के विषय में जान सकते हैं; उनके इस काव्य द्वारा हम उन सन्त को हुए ईश्वर के अलौकिक साक्षात्कार के बारे में भी जान सकते हैं।

सिद्धयोग पथ पर, भारत के सन्त-कवियों के गीत एवं काव्य, प्रबल व हर्षपूर्ण तरीक़ों की तरह संजोए जाते हैं जिनके माध्यम से श्रीगुरु की सिखावनियों के सार तक पहुँचा जा सके। वर्षों से, श्रीगुरुमाई ने अपनी सिखावनियाँ प्रदान करते समय सन्त-कवियों की रचनाओं को उद्धृत किया है और इस प्रकार सिद्धयोग विद्यार्थियों को नित-नवीन प्रेरणा दी है। सन्तों के काव्य की अविस्मरणीय छवियाँ और उस काव्य का संगीत जिन शक्तिपूरित भावों को जगाता है वे भाव भी, दैनिक कार्यों को करते समय हमारे बोध में स्वतः ही प्रवाहित हो सकते हैं, जिससे पावन ज्ञान का स्मरण रखने व उसे आत्मसात् करने में हमें सम्बल मिलता है।

यहाँ पर आपको जो गीत एवं काव्य मिलते हैं, वे परम चिति के साथ एक्य के बोध को विकसित करने पर केन्द्रित हैं। इनमें से कई, सोऽहम् मन्त्र पर बल देते हैं जो "मैं वह हूँ" के बोध को अभिव्यक्त करता है और जिसे श्रीगुरुमाई ने वर्ष २०१९ के अपने सन्देश में प्रदान किया था।

इन गीतों व कविताओं की रचना कई काव्यात्मक रूपों में की गई है :

- **भजन एवं अभंग** — भजन, हिन्दी भाषा में रचित भक्ति-गीत या स्तुतिगान हैं। महाराष्ट्र राज्य के मध्य पश्चिमी भागों के भक्ति-गीतों को अभंग कहा जाता है। ये मराठी भाषा में रचित होते हैं और प्रायः सुमधुर 'ओवी' रूप में छन्दबद्ध होते हैं। भजनों व अभंगों में अक़्सर ध्रुवपद व पद होते हैं जिन्हें किसी राग में संगीतबद्ध किया जाता है। इनमें से कई एक ही राग में लयबद्ध होते हैं, और कुछ की धुन एक जैसी होती है।
- **दोहे** — ये उत्तर भारत से, हिन्दी या उर्दू भाषा में रचित मात्रिक छन्द होते हैं जो तुकान्त होते हैं [मात्रिक छन्द : जिसमें मात्राओं की गणना की जाए; तुकान्त : छन्दों के अन्तिम अक्षरों का मेल]।

हर दोहा अपने आप में एक कविता होता है। अनेक दोहों को मिलाकर भजन और यहाँ तक कि महाकाव्य की भी रचना की जा सकती हैं। ये संक्षिप्त छन्द, सन्तों के प्रज्ञान को ऐसे रूप में प्रदान करते हैं कि उसे सरलता से याद रखा जा सके और जीवन में लागू किया जा सके।

- **स्तोत्र** — ये पाठ जो कभी-कभी लम्बे होते हैं और इनका उद्गम प्रायः प्राचीन ग्रन्थों में होता है, भगवान का स्तुति-गान करते हैं व भक्तिरस में डूबे होते हैं।

इन गीतों एवं कविताओं का अन्वेषण करने के लिए, ये कुछ सुझाव हैं :

- कई गीतों एवं कविताओं के साथ सिद्धयोग के संगीत सेवाकर्ताओं द्वारा गाई गई ऑडिओ रिकॉर्डिंग और इनके बोल भी दिए गए हैं। आप भारत के सन्त-कवियों को सुन सकते हैं व उनके साथ गा भी सकते हैं।
- हर रचना को ध्यान से पढ़ें और उसमें निहित ज्ञान पर मनन करें।
- हर रचना की व्याख्या में, आपको एक सुझाव मिलेगा जो यह बताएगा कि आप किस प्रकार उसकी सिखावनी को श्रीगुरुमाई के वर्ष २०१९ के सन्देश के अपने अध्ययन में लागू कर सकते हैं।
- यह विचार करें कि आप इन सिखावनियों को अपने दैनिक जीवन में और अपनी साधना में किस प्रकार कार्यान्वित करेंगे।
- अपने जर्नल में, अपनी अन्तर्दृष्टियों को लिखें और वे तरीक़े खोजें जिनसे ये अन्तर्दृष्टियाँ श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश को समझने व उसे कार्यान्वित करने में आपकी मदद करेंगी।
- अंग्रेज़ी पृष्ठ पर दिए “Share your experience” पर क्लिक करें और सार्वभौमिक सिद्धयोग संघम् में अन्य साधकों को उन रचनात्मक तरीक़ों के बारे में बताएँ जिनके द्वारा आप श्रीगुरुमाई के नववर्ष-सन्देश का अध्ययन करते हैं व उसे कार्यान्वित करते हैं।

©२०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।